

# डॉ. गैरी येट्स, यिर्मयाह, व्याख्यान 23, यिर्मयाह 38-39, सिदकिय्याह अवज्ञा और यरूशलेम का पतन

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स यिर्मयाह की पुस्तक पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 23, यिर्मयाह 37-39, सिदकिय्याह की अवज्ञा और यरूशलेम का पतन है।

इस पाठ में हमारा ध्यान यिर्मयाह अध्याय 37-39 पर है और हम सिदकिय्याह की अवज्ञा और यरूशलेम के पतन से निपट रहे हैं।

जाहिर है, हम समझते हैं कि ये बहुत महत्वपूर्ण अध्याय हैं क्योंकि ये वास्तव में यिर्मयाह के जीवन और मंत्रालय में घटी मुख्य घटना, यरूशलेम शहर के विनाश से संबंधित हैं। यिर्मयाह का धर्मशास्त्र हमारे लिए जो विकसित होने जा रहा है वह यह है कि यरूशलेम का पतन राजा और लोगों और यहूदा के अधिकारियों द्वारा प्रभु के वचन को न सुनने का प्रत्यक्ष परिणाम है। फिर, सबसे बड़ा धार्मिक संकट, शायद पुराने नियम में, निर्वासन है और भगवान ने मंदिर को कैसे नष्ट होने दिया।

इस सब में क्या हुआ? हम भजनों में ऐसे अंश देखते हैं जहां लोग इससे जूझ रहे हैं और भगवान के लोगों के भविष्य के साथ संघर्ष कर रहे हैं। भजन 89, दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा का क्या हुआ? यह एक बड़ी घटना है। यिर्मयाह का धार्मिक संदेश यह है कि इसका सीधा संबंध लोगों की प्रतिक्रिया देने में विफलता से है।

यह परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को त्यागना नहीं है। यह परमेश्वर द्वारा अपनी वाचा के वादों को पूरा न करना नहीं है। यह इस्राएल है जो परमेश्वर की बात न सुनकर या उसकी आज्ञा न मानकर वाचा में असफल हो गया है।

हम यिर्मयाह 26-45 के डिजाइन और साहित्यिक संरचना में देखते हैं कि यिर्मयाह 37-39 उस अंश से निकटता से संबंधित है जिसे हमने पिछली बार 27-29 में देखा था। वे दोनों एक राष्ट्र के रूप में यहूदा के अंतिम दिनों से निपट रहे हैं। वे सिदकिय्याह के समय से निपट रहे हैं, और वे यिर्मयाह के संदेश के प्रति लोगों की विभिन्न प्रतिक्रियाओं से निपट रहे हैं, बेबीलोनियों के अधीन हो जाओ, निर्वासन 70 वर्षों तक चलने वाला है, परमेश्वर बेबीलोनियों को न्याय के साधन के रूप में उपयोग कर रहा है।

कई मायनों में, वह एक विध्वंसक संदेश था। यह विचार कि ईश्वर ने यहूदा का नियंत्रण इन बुतपरस्त बेबीलोनियों को दे दिया था और शांति के झूठे भविष्यवक्ता ही थे जो विशेष रूप से इस

संदेश का विरोध कर रहे थे। हमने यिर्मयाह 27-29 में भविष्यसूचक संघर्ष के पूरे मुद्दे को देखा और वह कितना वास्तविक था।

यहूदा के अंतिम दिनों में हमें एक राष्ट्र के रूप में खुद को यरूशलेम की सड़कों पर उतारने और लोगों के दिमाग में खुद को स्थापित करने का लगभग मौका मिलता है। यहाँ हमें सच कौन बता रहा है? अब झूठे भविष्यवक्ताओं और भविष्यसूचक संघर्ष और इस प्रकार के मुद्दों में संलग्नता के साथ यह समस्या न केवल यिर्मयाह की पुस्तक में पाई जाती है, बल्कि यह हमारे लिए भविष्यवक्ता मीका में भी संक्षेप में प्रतिबिंबित होती है। पिछली बार हमने जो बात की थी उसके अनुवर्ती के रूप में मैं यहाँ कुछ छंदों का संदर्भ देना चाहता था।

याद रखें, मीका ने यिर्मयाह से एक सदी पहले प्रचार किया था। उसने घोषणा की कि यरूशलेम शहर नष्ट होने वाला है और यिर्मयाह 26 विशेष रूप से कहता है कि यह मीका का उपदेश और यरूशलेम के विनाश की चेतावनियाँ थीं जिसने हिजकियाह को पश्चाताप की प्रतिक्रिया के लिए प्रेरित किया। खैर, जब मीका उस संदेश का प्रचार कर रहा था और आने वाले फैसले की घोषणा कर रहा था, तो उसका यिर्मयाह की तरह ही विरोध किया गया था।

फिर से, शांति के पैगम्बरों द्वारा, जिनके पास वाचा के बारे में दोषपूर्ण दृष्टिकोण था, उनका मानना था कि ईश्वर इसराइल की रक्षा करेगा, वे उसके चुने हुए लोग थे, उन्हें कोई नुकसान नहीं हो सकता था, ईश्वर उनके घर को देखेगा, ईश्वर डेविडिक राजा की रक्षा करेगा, और इसलिए उनकी जब मीका प्रचार कर रहा था तो उसने जवाब दिया, यरूशलेम को समतल कर दिया जाएगा, इसे मलबे के ढेर में बदल दिया जाएगा, उन्होंने ये बातें कहीं। उपदेश मत दो, ऐसे उपदेश देते हैं। ऐसी बातों का प्रचार नहीं करना चाहिए।

अपमान हमें नहीं भोगेगा। क्या यह कहा जाना चाहिए, हे याकूब के घराने, क्या प्रभु अधीर हो गया है? क्या ये उसके कर्म हैं? आप जानते हैं, और वे कह रहे थे, देखो, आप जानते हैं, आपको इस तरह से प्रचार नहीं करना चाहिए। परमेश्वर अपने लोगों के विरुद्ध न्याय क्यों लाएगा? फिर, पद 11 में, मीका सोचता है कि लोगों ने उस पर कैसे प्रतिक्रिया दी है और वे न्याय के संदेशों के बजाय शांति के संदेश कैसे सुनना चाहते हैं; वह उनसे कहता है, यदि कोई व्यक्ति हवा और झूठ बोलता हुआ यह कहे कि मैं तुम्हें दाखमधु और मदिरा का उपदेश दूंगा, तो वह इस लोगों के लिए सही उपदेशक होगा।

देखो, तुम मेरे फैसले के संदेश नहीं सुनना चाहते, लेकिन अगर कोई तुम्हारे पास आकर कहे, भगवान तुम्हें पीने के लिए बहुत सारी बीयर और शराब देगा, और तुम सभी प्रकार के सुख और समृद्धि का अनुभव करने जा रहे हो, वह वह व्यक्ति होगा जिसे आप सुनना चाहेंगे। लेकिन मैं आपको चेतावनी दे रहा हूँ, इस प्रकार के लोग केवल झूठ बोल रहे हैं और आपसे झूठ बोल रहे हैं। मैं तुम्हें सच कह रहा हूँ।

अध्याय 3, पद 5 और 6 में, मीका झूठे भविष्यवक्ताओं के बारे में बात करता है। वह कहता है, यहोवा उन भविष्यवक्ताओं के विषय में यों कहता है जो मेरी प्रजा को भरमा देते हैं, और जो चिल्लाते हैं, शान्ति हो। तो, वह उसी तरह के भविष्यवक्ताओं से निपट रहा है जैसे यिर्मयाह के

पास थे, जो कह रहे थे, शांति, शांति। जब उनके पास खाने को कुछ होता है तो वे शांति कहते हैं, परन्तु जो उनके मुंह में कुछ नहीं डालता, उसके विरुद्ध युद्ध की घोषणा करते हैं।

इसलिए, वे न केवल शांति के खोखले वादे करते हैं, बल्कि यदि आप उन्हें सही कीमत चुकाते हैं, तो वे आपको वही बताएंगे जो आप उनसे कहलवाना चाहते हैं। वे आपको शांति के वादे देंगे, लेकिन यदि आप उन्हें अच्छा प्रेम प्रस्ताव नहीं देते हैं, तो वे आप पर निर्णय की घोषणा करेंगे। इसलिए, मीका झूठे भविष्यवक्ताओं के साथ संघर्ष कर रहा था, और अंततः, हिजकिय्याह ने परमेश्वर को जवाब देने, न्याय की चेतावनियों को सुनने और उन चीजों को गंभीरता से लेने का सही विकल्प चुना, और इसके कारण यरूशलेम को आंशिक रूप से 701 में बचा लिया गया।

यिर्मयाह, अध्याय 37 से 39 में यह प्रचार कर रहा है कि परमेश्वर यरूशलेम पर विनाश लाने जा रहा है। सिदकिय्याह सही तरीके से जवाब नहीं देने वाला है, और पहली बात जो हम अध्याय 37, 1-2 में पढ़ते हैं, इस खंड का परिचय देते हुए, यिर्मयाह 26-45 के लिए एक महत्वपूर्ण सारांश कथन, यह कहता है: योशियाह का पुत्र सिदकिय्याह, जिसे बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने यहूदा देश में राजा बनाया था, कोन्याह या यहोयाकीम के पुत्र यहोयाकीन के स्थान पर राजा बना, लेकिन न तो उसने, न उसके सेवकों ने, न ही देश के लोगों ने यहोवा के उन वचनों को सुना जो उसने यिर्मयाह भविष्यवक्ता के माध्यम से कहे थे। ठीक है, तो, यरूशलेम का विनाश जो हमारे लिए अध्याय 39 में वर्णित है, जो हमारे लिए यिर्मयाह की पुस्तक के अंत में अध्याय 52 में भी वर्णित है, ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि राजा और प्रजा ने यहोवा के वचन पर ध्यान नहीं दिया।

हम यिर्मयाह 37-39 में जो देखते हैं, जो उस वृत्तांत की ओर ले जाता है जहां हमें शहर के वास्तविक पतन का पता चलता है, वह यह है कि हमारे पास पांच अलग-अलग एपिसोड हैं जो यिर्मयाह के संदेश की प्रतिक्रिया से संबंधित हैं कि हम बेबीलोन के प्रति कैसे समर्पण करते हैं। ठीक है, 27-29 में, हमने यिर्मयाह को तीन बार दोहराया था: बेबीलोन के सामने समर्पण करो, उसके अधिकार के सामने समर्पण करो, उन भविष्यवक्ताओं की बात मत सुनो जो तुम्हें धोखा देने की कोशिश कर रहे हैं। उसी तरह, हमारे पास विभिन्न एपिसोड होंगे जहां यिर्मयाह बेबीलोनियों के सामने आत्मसमर्पण करने की आवश्यकता के बारे में बात करेगा और उसे किस तरह की प्रतिक्रिया मिलेगी।

ठीक है, अब इन पांच एपिसोड में इसका लेआउट भी एक खास पैटर्न पर चलने वाला है. हम फिर से एक पैटर्न बनाने जा रहे हैं, जहां हमारे पास एक प्रकार की पैनलिंग चल रही है, जहां हमारे पास ए और बी तत्व हैं जो एक दूसरे के बगल में रखे जा रहे हैं। हमारे पास अध्याय 37, श्लोक 3-5 में एक तत्व है, जहां हम राजा सिदकिय्याह को यिर्मयाह के साथ बातचीत करते हुए और संदेश पर उसकी प्रतिक्रिया देते हुए देखते हैं कि उन्हें बेबीलोनियों के सामने आत्मसमर्पण करने की आवश्यकता है।

अध्याय 37, छंद 6-10 में, हमारे पास एक बी तत्व है जहां हमारे पास सैन्य अधिकारी हैं जो सिदकिय्याह के अधीन हैं और यिर्मयाह के प्रति उनकी प्रतिक्रिया है। अध्याय 37, ए तत्व पर वापस जाते हुए, हमारे पास यिर्मयाह की राजा सिदकिय्याह के साथ बातचीत की एक कहानी है। फिर अगला बी तत्व, फिर से, यह अध्याय 38, छंद 1-12 में सैन्य अधिकारी हैं, और यिर्मयाह के

संदेश के प्रति उनकी प्रतिक्रिया और इस संदेश के प्रति उनकी शत्रुता है कि यिर्मयाह उपदेश दे रहा है कि उनका मानना है कि युद्ध के प्रयास कम हो रहे हैं और उनके प्रतिरोध में बाधा आ रही है। बेबीलोन।

और फिर अंत में, अध्याय 37 के अंत में, श्लोक 17 से अध्याय के अंत तक, हमारे पास फिर से ए तत्व है जहां यिर्मयाह राजा सिदकिय्याह के साथ बातचीत कर रहा है। तो, इस ABAB में, राजा और शाही अधिकारियों के साथ यिर्मयाह की अलग-अलग बातचीत के विपरीत, हम फिर से कुछ कथात्मक समानता देखते हैं जो हमें प्रभु के वचन के प्रति प्रतिक्रिया के आवर्ती उदाहरण देखने में मदद करती है। हमारे पास अध्याय 37-39 में कथात्मक समानता भी है, इस अर्थ में कि सिदकिय्याह की अवज्ञाकारी प्रतिक्रिया को अध्याय 36 में यहोयाकीम की पिछली अवज्ञाकारी प्रतिक्रिया के बगल में भी रखा गया है।

और यहोयाकीम वह राजा था जिसने 609-597 तक शासन किया। उसने प्रभु की बात नहीं मानी। दरअसल, जब प्रभु का संदेश उसके पास आया, तो वह क्रोधित और शत्रुतापूर्ण हो गया।

उसने अध्याय 26 में ऊरिय्याह को मार डाला। उसने अध्याय 36 में यिर्मयाह की भविष्यवाणियों की पुस्तक को काट दिया। अब, सिदकिय्याह की प्रतिक्रियाएँ, अध्याय 37-39, उसके ठीक बगल में रखी गई हैं।

और सिदकिय्याह 597-586 तक अंतिम दिनों में राजा है। न तो उसने, न उसकी प्रजा ने, न उसके सेवकों ने, प्रभु का वचन भी नहीं सुना। तो, आप जिस भी समय सीमा को देख रहे हैं, यिर्मयाह के मंत्रालय की जिस भी समय अवधि पर आप विचार कर रहे हैं, नेताओं और अधिकारियों और लोगों ने प्रभु के वचन को नहीं सुना।

सिदकिय्याह यहोयाकीम की तरह ही परमेश्वर के न्याय का पात्र है। अब, यह थोड़ा आश्चर्य की बात है क्योंकि जब आप दो व्यक्तियों की तुलना करते हैं, तो वे बहुत अलग दिखते हैं। जब भी यहोयाकीम का सामना प्रभु के वचन से होता है तो वह क्रोधित हो जाता है और हिंसक हो जाता है।

वह ईश्वर से नहीं डरता। ऐसा लगता है कि उसे भविष्यवाणी के वचनों की जरा भी परवाह नहीं है। उसे भविष्य में होने वाले परिणामों का भी कोई डर नहीं है।

ऐसा कभी नहीं हुआ कि यहोयाकीम और यिर्मयाह एक दूसरे से मिलें क्योंकि यह बहुत ही अस्थिर है। इन लोगों के बीच का रिश्ता बहुत ही विस्फोटक है। यिर्मयाह इस राजा की मौजूदगी में नहीं हो सकता क्योंकि अगर वह ऐसा करेगा तो राजा उसे पकड़ लेगा और उसके साथ वही करेगा जो उसने उरिय्याह के साथ किया था और उसे मौत के घाट उतार देगा।

दूसरी ओर, जब हम सिदकिय्याह के पास आते हैं, तो हमारे पास एक बहुत ही अलग तरह का व्यक्ति होता है। हमारे पास एक भविष्यवक्ता या एक राजा होता है जो लगातार भविष्यवक्ता के साथ बातचीत करता रहता है। वहाँ संदेश हैं जहाँ यिर्मयाह सिदकिय्याह से बात कर रहा है।

वे एक दूसरे से बातचीत कर रहे हैं। सिदकिय्याह लगातार उससे पूछ रहा है, क्या प्रभु की ओर से कोई वचन है? और हर बार जब वह उससे पूछता है, क्या प्रभु की ओर से कोई वचन है? संदेश मूलतः एक ही है। लेकिन यहाँ हम उसे तीन अलग-अलग बार देख रहे हैं।

क्या प्रभु की ओर से कोई वचन है? लेकिन हम पहले भी पुस्तक में यिर्मयाह और सिदकिय्याह को एक दूसरे के साथ बातचीत करते हुए देख चुके हैं। अध्याय 21, पद 4-10। सिदकिय्याह यिर्मयाह से कहता है, क्या तुम हमारे लिए प्रार्थना करोगे? कि प्रभु हमें मुक्ति दिलाए।

अध्याय 32, श्लोक 1-5. फिर से, यिर्मयाह का संदेश. अगर राजा समर्पण नहीं करता है तो उसके साथ यही होगा.

अध्याय 34, श्लोक 1-7. एक और बार जहाँ सिदकिय्याह कहता है, क्या प्रभु की ओर से कोई वचन है कि क्या होने वाला है? और प्रभु का वचन हर बार एक ही होता है। अब, अध्याय 34 दिलचस्प है क्योंकि ऐसा लगता है कि यिर्मयाह सिदकिय्याह को अधिक सकारात्मक प्रतिक्रिया देता है।

आप शांति से मर सकेंगे, और ऐसा लगता है कि सिदकिय्याह के लिए सब कुछ ठीक हो सकता है। अब, कुछ आलोचनात्मक विद्वानों ने इस पर गौर किया है, और उन्होंने अलग-अलग संपादकों और अलग-अलग संपादकों को अलग करने की कोशिश की है जिन्होंने सिदकिय्याह के लिए इन अलग-अलग प्रतिक्रियाओं की रचना की है। लेकिन मुझे लगता है कि हमारे पास जो चल रहा है वह यह है कि सिदकिय्याह प्रभु के वचन पर कैसे प्रतिक्रिया देगा, इसके आधार पर हमारे पास अलग-अलग परिणामों की संभावना है।

आप देखिए, इस तथ्य के बावजूद कि यहूदा ने वास्तव में सीमा पार कर ली है, इस तथ्य के बावजूद कि परमेश्वर ने इन सभी परिवर्तनशील समय-सीमाओं को तय किया है और अंततः, वे अपरिवर्तनीय न्याय के बिंदु पर पहुँच गए हैं, परमेश्वर अभी भी सिदकिय्याह को कुछ छूट दे रहा है कि यदि वह यिर्मयाह के संदेश का जवाब देता है और आत्मसमर्पण करता है, तो उसका जीवन बख्श दिया जाएगा, और चीजें उसके लिए वास्तव में जितनी बेहतर थीं, उससे कहीं बेहतर होंगी। यिर्मयाह अध्याय 34 में कह रहा है, तुम शांति से मरोगे। जब हम अध्याय 39 में सिदकिय्याह के साथ क्या हुआ, इस पर नज़र डालते हैं, तो हम महसूस करते हैं कि उसने परमेश्वर के वचन का जवाब देने के तरीके से इस सकारात्मक परिणाम का अवसर खो दिया।

अब सिदकिय्याह लगातार राजा के साथ ये बैठकें कर रहा है। वह यहोयाकीम से अलग है। वह क्रोधित नहीं होता।

वह राजा के जीवन को खतरे में नहीं डालता या नबी के जीवन को खतरे में नहीं डालता। वह अक्सर नबी की मदद करने के लिए कुछ करता है, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि सिदकिय्याह अधिकारियों से उतना ही डरता है जितना यिर्मयाह, लेकिन अंततः, वह यहोयाकीम जितना ही अवज्ञाकारी है। और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई व्यक्ति परमेश्वर के वचन के प्रति

विद्रोही और शत्रुतापूर्ण और क्रोधित है या परमेश्वर द्वारा बताए गए कामों को करने के प्रति उदासीन और भयभीत है। अंततः, यह अवज्ञा है।

चाहे कोई व्यक्ति गुस्से में सुसमाचार को अस्वीकार कर दे और कहे, मैं यह सुनना नहीं चाहता, मुझसे दूर हो जाओ, या कोई व्यक्ति विनम्रता से इसे सुनता है और फिर जो कहा गया है उसे अनदेखा कर देता है, वे दोनों ही ईश्वर की निंदा के अधीन हैं। और मुझे लगता है कि वास्तव में आप यहाँ दूसरे पैनल में कथात्मक समानता में यही देखते हैं, कि सिदकिय्याह की अवज्ञा यहोयाकीम की अवज्ञा के समानांतर है। अंततः, वे एक ही नाव में हैं।

ठीक है? ठीक है, तो आइए इन पाँच प्रकरणों पर नज़र डालें। अध्याय 37, पद 3 से 5। सिदकिय्याह पद 3 में यह कहता है। वह कहता है, कृपया हमारे लिए हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करें। ठीक है, तो यहाँ सम्मेलन की शुरुआत है।

हमें प्रार्थना की ज़रूरत है। अच्छा, याद कीजिए कि अध्याय 7, अध्याय 11, अध्याय 14 और अध्याय 15 में परमेश्वर ने यिर्मयाह से क्या कहा था? इन लोगों के लिए प्रार्थना मत करो। और इसलिए, भविष्यवक्ता अंततः वह नहीं कर पाएगा जो राजा उससे करने के लिए कह रहा है।

ठीक है? अब, राजा वास्तव में यिर्मयाह से किस लिए प्रार्थना करने के लिए कह रहा है? क्या वह यिर्मयाह से प्रार्थना करने के लिए कह रहा है कि प्रभु मुझे उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए बुद्धि दे और जो ईश्वर मुझसे करने को कह रहा है उस पर अमल करने के लिए शक्ति और साहस दे? अब, यह बिल्कुल वैसा नहीं है जिसके लिए वह प्रार्थना कर रहा है। हम अध्याय 21, श्लोक 2 में सीखते हैं, जो कि उसी घटना का एक समानांतर विवरण हो सकता है जिसे हम अध्याय 37 में पढ़ रहे हैं। यहां बताया गया है कि वह वास्तव में भगवान से क्या करने के लिए कह रहा है।

हमारे लिये यहोवा से पूछो, क्योंकि बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर हमारे विरुद्ध युद्ध कर रहा है। कदाचित् प्रभु अपने सब आश्चर्यकर्मों के अनुसार हम से व्यवहार करेगा, और उसे हम से दूर कर देगा। इसलिए, वह वह करने के लिए साहस और नैतिक ताने-बाने की माँग नहीं कर रहा है जो ईश्वर उससे कराना चाहता है।

वह भगवान से उसे इस स्थिति से बाहर निकालने की प्रार्थना कर रहा है। जब हम 37 पर वापस आते हैं और एपिसोड में वहाँ मुठभेड़ होती है, तो यिर्मयाह उसके लिए प्रार्थना नहीं करने वाला है। वह उसके लिए यह अवसर नहीं खोलने जा रहा है कि भगवान उसे इससे बाहर निकालने जा रहा है।

वह उसे बताने जा रहा है कि स्थिति निराशाजनक है। अब, मैंने इसे कई बार उठाया है, और मैं वादा करता हूँ कि यह शायद आखिरी बार है जब मैं इसका उल्लेख करूँगा, लेकिन जब भी हम यरूशलेम के आने वाले पतन के बारे में ये कहानियाँ सुनते हैं, तो हमारे पास हमेशा वही होता है जो हिजकिय्याह के साथ हुआ था और 701 ईसा पूर्व में यरूशलेम शहर। वह अभी भी प्रतिध्वनित हो रहा है, और ऐसा बहुत समय पहले नहीं हुआ है।

यह एक चमत्कारी मुक्ति थी। भगवान ने ग्यारहवें घंटे में कदम रखा था। इसने यरूशलेम के बारे में यहूदा के लोगों की उन परंपराओं को पूरा किया, पुष्टि की और, एक अर्थ में, उन्हें मान्य किया, कि भगवान हमेशा शहर की रक्षा करने वाले थे।

और इसलिए, जब हिजकिय्याह ने इस मुक्ति का अनुभव किया, सिदकिय्याह जब प्रार्थना करता है तो वह यही माँगता है कि शायद प्रभु दया करें, शायद प्रभु हमें मुक्ति दें, वह माँगता है कि शायद परमेश्वर हमारे लिए हिजकिय्याह जैसी मुक्ति करे। अब, हमने यिर्मयाह की यहोयाकीम के साथ बातचीत में देखा कि ऐसा नहीं होने वाला है क्योंकि राजा यहोयाकीम, तुम कोई हिजकिय्याह नहीं हो, तुम कोई योशियाह नहीं हो, तुम्हारा न्याय होने वाला है। लेकिन हम इस संभावना पर वापस आ गए हैं।

हमें यहाँ एक नया राजा मिल गया है। हमें एक ऐसा राजा मिल गया है जो कम से कम पैगंबर को आमंत्रित करने और पैगंबर की बातें सुनने के लिए तैयार है। शायद यह संभावना है कि भगवान उद्धार लाएंगे।

हिजकिय्याहों में से एक और का अनुभव करने जा रहे हैं। अच्छा, सुनो परमेश्वर भविष्यद्वक्ता से क्या कहने जा रहा है या परमेश्वर राजा और हाकिमों से क्या कहने जा रहा है। तो आंशिक रूप से, जिस चीज़ ने सिदकिय्याह को यिर्मयाह के पास आने और उससे उसके लिए प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया था, वह यह थी कि घटनाओं में एक सकारात्मक मोड़ आया था।

मिस्रियों ने आक्रमण किया था और वे यहूदा को सहायता की पेशकश कर रहे थे क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि बेबीलोनवासी उनके क्षेत्र पर अतिक्रमण करें। वे जानते थे कि यदि बेबीलोनियों ने अंततः यहूदा पर कब्ज़ा कर लिया, तो इससे वे हमारी भूमि पर आक्रमण करने के करीब आ गए। इसलिए, वे इसे रोकने में यहूदा की मदद करने की कोशिश कर रहे हैं।

सिदकिय्याह को मिस्र के साथ इस गठबंधन पर भरोसा है कि संभवतः यही उसे मुक्ति दिलाएगा। यिर्मयाह आता है, और वह इस पर किसी भी संभावित आशावादी समाधान का विस्फोट करता है। मिस्रवासी आपकी सहायता नहीं करेंगे।

इस स्थिति में उनका सैन्य हस्तक्षेप इस स्थिति को बदलने वाला नहीं है। वास्तव में, यदि आपकी सेना आगे बढ़ती और कसदियों को हरा देती, जो घायल लोग कसदियों में रह गए थे, तो वे अभी भी इस शहर पर कब्ज़ा कर सकते थे। याद कीजिए कि कैसे दाऊद अंदर गया था और आखिरकार लोगों के एक छोटे समूह के साथ यरूशलेम पर कब्ज़ा कर लिया था जो शहर में घुस आए थे।

अरे, चाल्डियन ऐसा करने जा रहे हैं। इससे कोई बच नहीं सकता। भले ही आप एक बड़ी सैन्य जीत हासिल कर लें, लेकिन यह काम नहीं करेगा।

खैर, यह यिर्मयाह को एक तरह से स्थापित करता है। आइए यिर्मयाह और यशायाह को एक भविष्यद्वक्ता के रूप में तुलना करें। यशायाह, प्रभु इस शहर को बचाने जा रहा है।

सन्हेरीब और उसकी सेनाएँ इस शहर पर एक भी तीर नहीं चलाएँगी। मुझे यकीन है कि राजा सोच रहा था, हम यशायाह जैसे अच्छे पुराने दिनों के भविष्यवक्ताओं में से एक को क्यों नहीं पा सकते? तुम्हें पता है, यिर्मयाह एक कमतर आदमी जैसा लगता है। यशायाह परमेश्वर के प्रति इतना घनिष्ठ है कि वह परमेश्वर के उद्धार की गारंटी दे सकता है।

हमें एक प्रकार से दूसरे दर्जे का भविष्यवक्ता मिल गया है जो हमें केवल निर्णय ही बता सकता है। पीट डायमंड ने यिर्मयाह के इस भाग का कुछ दिलचस्प अंतरपाठीय अध्ययन प्रदान किया। जिन चीजों पर उन्होंने ध्यान दिया उनमें से एक यह है कि यशायाह और हिजकिय्याह और फिर यिर्मयाह और सिदकिय्याह की कहानी के बीच निश्चित रूप से कुछ अंतरपाठीय संबंध हैं।

और यहां दिलचस्प बात यह है कि यिर्मयाह निश्चित रूप से एक कम पैगम्बर की तरह दिखता है। वास्तव में, डायमंड जो सुझाव देने जा रहा है वह यह है कि यदि आप यशायाह और हिजकिय्याह की कहानी पर वापस जाते हैं, तो उस कहानी में यिर्मयाह जिस व्यक्ति से सबसे अधिक मिलता-जुलता है, वह असीरियन सेना का कमांडर, बुतपरस्त असीरियन रबशाके है, जो बता रहा है यहूदा के राजा, हमारी सेना का सामना करने का प्रयास करना आपके लिए निराशाजनक है। इसलिए यदि हम यशायाह और यिर्मयाह के बीच अंतरपाठीय तुलना करने जा रहे हैं, तो यिर्मयाह यशायाह जैसा नहीं दिखता है।

यिर्मयाह एक बुतपरस्त रबशाके की तरह दिखता है, जो असीरियन सेना का कमांडर है, जो यहूदा के लोगों से कह रहा है, देखो, यह निराशाजनक है। ऐसा कोई रास्ता नहीं है कि तुम्हें हमारी सेना से कभी बचाया जा सके। वास्तव में, यशायाह 37 :4-9 के इस अंश को सुनें, और इसकी तुलना उस बात से करें जो हमने यिर्मयाह को राजा सिदकिय्याह से कहते हुए सुना था।

देखो, भले ही तुम बेबीलोनियों को हरा दो, भले ही मिस्री आकर तुम्हारी मदद करें, बेबीलोन की सेना के घायल लोग जो अस्पताल में हैं, वे ही हैं जो आकर शहर को जला सकते हैं। रबशाकेह क्या कहता है, सुनो, और यह अध्याय 36, श्लोक 4-9 में है। हिजकिय्याह से यह कहो, महान राजा, अशशूर का राजा, यह कहता है, तुम अपना यह भरोसा किस पर रखते हो? तुम जानते हो कि यरूशलेम शहर की रक्षा की जाएगी।

क्या तुम सोचते हो कि युद्ध के लिए सिर्फ शब्द ही रणनीति और शक्ति हैं? अब तुम किस पर भरोसा करते हो कि तुमने मेरे खिलाफ विद्रोह किया है? देखो, तुम मिस्र पर भरोसा कर रहे हो। हिजकिय्याह ने वही किया जो सिदकिय्याह कर रहा था। उसने मिस्र के साथ संधि की थी और सोचा था कि मिस्रियों की सैन्य सहायता से उसे मदद मिलेगी।

इससे कोई मदद नहीं मिलने वाली है। यिर्मयाह वही बात कह रहा है जो रबशाके ने यिर्मयाह अध्याय 37 में कही है। रबशाके ने यह भी कहा है कि मिस्र एक टूटी हुई छड़ी है जो उस व्यक्ति के हाथ में चुभ जाएगी जो उस पर झुकेगा।

मिस्र का राजा फिरौन उन सभी के लिए ऐसा ही है जो उस पर भरोसा करते हैं। इसलिए, आप इस सेना पर भरोसा कर रहे हैं जो आपकी मदद करने जा रही है। वे आपकी मदद नहीं करने जा रहे हैं।



और फिरौन बस एक टूटे हुए नरकट की तरह होगा जो तुम्हारे हाथ में छेद कर देगा। वह तुम्हें नहीं बचाएगा। वह पद 8 में आगे कहता है, अब आओ, मेरे स्वामी, अशशूर के राजा के साथ शर्त लगाओ।

मैं तुम्हें दो हज़ार घोड़े दूँगा। यदि तुम उन पर सवारियाँ चढ़ाने में समर्थ हो, तो तुम मेरे स्वामी के छोटे से छोटे सेवक के एक भी सरदार को कैसे पीछे धकेल सकते हो, जब तुम रथों और सवारों के लिए मिस्र पर भरोसा करते हो? इसके अलावा, यह यहोवा के बिना ही है कि मैं इस देश को नष्ट करने के लिए आया हूँ। क्या यह यहोवा के बिना ही है कि मैं इस देश को नष्ट करने के लिए आया हूँ? यहोवा ने मुझसे कहा, इस देश पर चढ़ो और इसे नष्ट कर दो।

ठीक है? तो, हर तरह से, अगर आप यशायाह और यिर्मयाह और हिजकिय्याह और सिदकिय्याह के बीच एक अंतर-पाठीय तुलना करने जा रहे हैं, तो यिर्मयाह बहुत अच्छा नहीं दिखता है। वह असीरियन रबशाकेह जैसा दिखता है। आपको बचाने के लिए प्रभु पर भरोसा मत करो।

यिर्मयाह कहता है, देखो, भले ही तुम सेना को हरा दो, भले ही तुम कसदियों को हरा दो, अस्पताल में घायल लोग तुम्हें हरा देंगे। अशशूर के सेनापति रबशाके ने उन्हें ताना मारा और कहा, देखो, चलो इस लड़ाई को निष्पक्ष बनाते हैं। मैं तुम्हें दो हज़ार घोड़े दूँगा।

तुम्हारे पास इतनी सेना भी नहीं है कि तुम घोड़ों पर लोगों को बिठा सको। मैं तुम्हारी मदद करूँगा। फिर भी, मैं तुम्हें हरा दूँगा।

रबशाकेह कहता है, देखो, मैं अपनी ताकत से यहाँ नहीं आया हूँ। यहोवा ने मुझे यहाँ आने और इन लोगों को हराने के लिए भेजा है। यिर्मयाह कहता है कि यहोवा ही वह है जिसने बेबीलोन की सेना को आगे बढ़ाया है।

प्रभु ही वह है जो यरूशलेम को राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में देगा। आप जानते हैं, यहाँ हर संभव तरीके से, यिर्मयाह जैसा दिखने वाला एकमात्र व्यक्ति यशायाह नहीं है। ईश्वर का सच्चा भविष्यवक्ता नहीं।

वह असीरियन कमांडर जैसा दिखता है। और ठीक उसी तरह जैसे इस बुतपरस्त ने कहा, अपने उद्धार के लिए प्रभु पर भरोसा मत करो, ऐसा लगता है कि यिर्मयाह भी यही कह रहा है। लेकिन इस इंटरटेक्स्टुअल का ट्विस्ट और पंचलाइन, समस्या भविष्यवक्ता नहीं है।

समस्या यह नहीं है कि यिर्मयाह यशायाह से कमतर भविष्यवक्ता है। समस्या यह नहीं है कि, आप जानते हैं, यिर्मयाह एक बुतपरस्त सेनापति के धर्मशास्त्र को साझा करता है। समस्या यह है कि सिदकिय्याह के जीवन में हिजकिय्याह की प्रतिक्रिया के बराबर कोई प्रतिक्रिया नहीं होने वाली है।

और इसलिए, कोई उद्धार नहीं हो सकता। कोई सेना अंतिम समय में उद्धार के लिए नहीं आ सकती क्योंकि यहाँ सिदकिय्याह द्वारा विश्वास की कोई प्रतिक्रिया नहीं है। इसलिए, यिर्मयाह की

सेवकाई को कम करने वाली अंतरपाठीयता फिर से वही बात कह रही है जो यिर्मयाह ने पहले यहोयाकीम से कही थी।

यहोयाकीम, तुम हिजकिय्याह नहीं हो। भविष्यवक्ता अब सिदकिय्याह से भी यही बात कह रहा है। देखो, कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई है, कोई पश्चाताप नहीं हुआ है, इसलिए, परमेश्वर उद्धार नहीं ला सकता।

ठीक है, सिदकिय्याह से इस पर किस तरह की प्रतिक्रिया मिलती है? इस बात का कोई संकेत नहीं है कि वह कभी सकारात्मक तरीके से प्रतिक्रिया देगा। वास्तव में, जो होता है वह यह है कि अब हमारे पास अध्याय 37, श्लोक 11 और उसके बाद के भाग में हमारे बी तत्व में सैन्य अधिकारियों का हस्तक्षेप है। अब, जब फिरौन की सेना के आने पर कसदियों की सेना यरूशलेम से वापस चली गई थी, तो यिर्मयाह यरूशलेम से निकलकर बिन्यामीन की भूमि पर लोगों के बीच अपना हिस्सा लेने के लिए गया, संभवतः वह उस भूमि की खरीद से निपट रहा था जिसे उसने अध्याय 32 में खरीदा था।

लेकिन जब वह शहर छोड़ने के लिए तैयार हो रहा था, तो यह कहा गया कि सैन्य अधिकारियों के एक समूह ने उसे पकड़ लिया। और मैं इस बार उनके नाम नहीं पढ़ने जा रहा हूँ जैसा कि मैंने पहले के एक वीडियो में पढ़ा था और उनका नरसंहार और कत्लेआम नहीं करूँगा। लेकिन यहाँ वे उनसे क्या कहते हैं।

और उन्होंने यिर्मयाह को पकड़कर कहा, तू कसदियोंके पास भाग जाता है। यह बिल्कुल पुष्टि करता है कि हम आपके बारे में क्या सोचते हैं। तुम देशद्रोही हो।

और यह पूरा संदेश और यह पूरा विचार कि हमें बेबीलोनियों के सामने आत्मसमर्पण करने की आवश्यकता है, आप दूर जाने की कोशिश करने के लिए उनके पास जा रहे हैं। और कुछ अर्थों में, आप सोचेंगे कि वे उससे छुटकारा पाकर खुश होंगे, लेकिन वे उस पर दलबदल का आरोप लगाते हैं, और यिर्मयाह का कहना है कि यह झूठ है। मैं कसदियों के पास नहीं जा रहा हूँ।

लेकिन वे नहीं माने. उन्होंने यिर्मयाह को पकड़ लिया। उन्होंने उसे कैद कर लिया.

उन्होंने उसे पीटा। तो, ए तत्व राजा की प्रतिक्रिया है। वह यिर्मयाह की बात को स्वीकार नहीं कर सकता।

वह इससे डरता है। फिर, अध्याय 37 की आयत 11 से 15, बी, में वह प्रसंग है जहाँ यिर्मयाह सैन्य अधिकारियों के साथ बातचीत कर रहा है। वे शत्रुतापूर्ण हैं।

वे क्रोधित हैं। वे यिर्मयाह पर देशद्रोही होने का आरोप लगा रहे हैं। और इसके परिणामस्वरूप, उन्होंने उसे पीटा और जेल में डाल दिया।

अब, वापस A तत्व पर आते हैं। अगला एपिसोड, फिर से, यिर्मयाह द्वारा सिदकिय्याह को यह दोहराना होगा कि तुम्हें बेबीलोनियों के सामने आत्मसमर्पण करना होगा, अध्याय 37, श्लोक 16 से 21। यिर्मयाह को जेल में डाल दिया जाता है।

वह कई दिनों तक वहाँ रहता है। और यहाँ श्लोक 17 में क्या होता है। हम इसे पहले भी देख चुके हैं।

राजा सिदकिय्याह ने उसे बुलवाया और उसका स्वागत किया, और फिर राजा ने अपने घर में उससे गुप्त रूप से पूछा और कहा, क्या प्रभु की ओर से कोई वचन है? मुझे अभी तक इस पर परमेश्वर का दृष्टिकोण नहीं मिला है। क्या प्रभु की ओर से कोई वचन है? यिर्मयाह का जवाब होना चाहिए था, हाँ, आपने इसे पहले ही कई बार सुना है। लेकिन यिर्मयाह कहता है, हाँ, है।

तुम बाबुल के राजा के हाथ में सौंप दिए जाओगे। यिर्मयाह ने सिदकिय्याह से यह भी कहा, मैंने तुम्हारा, तुम्हारे सेवकों का या तुम्हारी प्रजा का क्या बिगाड़ा है कि तुमने मुझे जेल में डाल दिया है? और श्लोक 19, तुम्हारे भविष्यद्वक्ता कहाँ हैं जिन्होंने तुमसे भविष्यवाणी की थी कि बाबुल का राजा तुम्हारे और इस देश के विरुद्ध नहीं आएगा? तो, हम भविष्यवाणी संघर्ष पर वापस आ गए हैं। देखो, अगर वे लोग सही थे, तो तुम उनसे बात क्यों नहीं कर रहे हो? क्या प्रभु की ओर से कोई वचन है? एकमात्र बात, फिर से, यह है कि कोई प्रतिक्रिया नहीं है; सिदकिय्याह प्रभु के वचन का पालन नहीं करने वाला है।

केवल एक चीज जो वह यहां करता है वह यह है कि वह यिर्मयाह को रहने के लिए एक अधिक अनुकूल जेल देता है। उस कालकोठरी के बजाय जिसमें सैन्य अधिकारियों ने उसे डाल दिया है, यह बताता है कि यिर्मयाह को गार्ड के दरबार में डाल दिया जाएगा और उसे जेल में डाल दिया जाएगा। अधिक अनुकूल परिस्थितियाँ दी गईं। उसे एक रोटी भी दी जाएगी।

लेकिन आप जानते हैं, यह पर्याप्त नहीं है। यह सिर्फ पैगंबर की देखभाल करना और उनके जीवन की रक्षा करना नहीं है। यदि वह वास्तव में सुनना चाहता है कि भगवान यहाँ क्या कह रहे हैं, तो उसे आगे बढ़ना होगा और उसका पालन करना होगा।

लेकिन यह विचार कि आप समझ रहे हैं कि वह गुप्त रूप से आ रहा है, वह पूछताछ कर रहा है, वह इन सैन्य अधिकारियों से उतना ही भयभीत है और वे उसके साथ क्या कर सकते हैं, जैसा कि यिर्मयाह से है। तो, हमारे पास यह ए तत्व है, राजा भविष्यद्वक्ता से मिलता है। हमारे पास बी तत्व है, सैन्य अधिकारी पैगंबर से मिलते हैं, वे उसे कैद करते हैं, और वे उस पर देशद्रोही होने का आरोप लगाते हैं।

फिर हम राजा के पास वापस आ गए, और अध्याय 38, श्लोक 1-13 में, अगले एपिसोड में, हम सैन्य अधिकारियों के साथ बातचीत करते हुए यिर्मयाह के पास वापस आ गए। और फिर, अधिकारियों की प्रतिक्रिया गुस्से वाली होगी। वे कहने लगे, तुम यह संदेश क्यों सुनाते रहते हो कि जो इस नगर में रहेगा वह तलवार से मरेगा? वे इसे राजा के पास लाते हैं।

श्लोक 4, यह आदमी शहर में बचे हुए सैनिकों के हाथों को कमजोर कर रहा है। यही अभिव्यक्ति लाकिश पत्रों में पाई जाती है, जहां सैन्य अधिकारी चर्चा करते हैं कि सैनिक कैसे हतोत्साहित हो गए हैं, और यह उनके हाथों के कमजोर होने की बात करता है। वे हतोत्साहित हैं।

वे लड़ना नहीं चाहते. और यिर्मयाह का संदेश सीधे तौर पर इसका कारण है, वे कहते हैं। तो इसके परिणामस्वरूप, हमें जो करने की ज़रूरत है वह यह है कि हमें यिर्मयाह से छुटकारा पाना है, और उन्होंने उसे एक कुंड में फेंक दिया है।

सिदकिय्याह, जो एक कमजोर नेता था, इन अधिकारियों और इन सेनापतियों से डरकर आगे-पीछे डोलता रहा, उसने कहा, देखो, वह तुम्हारे हाथ में है, क्योंकि राजा तुम्हारे विरुद्ध कुछ नहीं कर सकता। इसलिए, उन्होंने यिर्मयाह को पकड़ लिया, और उसे कुएँ में फेंक दिया। और वे उसे मरने के लिए वहीं छोड़ देते हैं।

यह केवल एबेद-मेलक नामक एक विदेशी अधिकारी का हस्तक्षेप है, जो राजा से कहता है, हम यह बड़ा पाप नहीं कर सकते। वह ईश्वर का दूत है, और यह विदेशी, यह इथियोपियाई, राजा को यिर्मयाह को कुएँ से बचाने के लिए मना लेता है। हम एबेद-मेलक के बारे में थोड़ा और बात करेंगे।

लेकिन अधिकारियों की प्रतिक्रिया पर ध्यान दें। और हम आगे-पीछे जाते हैं, सिदकिय्याह की झिझक, अधिकारियों का गुस्सा। यह यिर्मयाह और राजा के बीच एक और मुठभेड़ में खुद को प्रकट करने जा रहा है।

मैं यहां बस कुछ बातें नोट करने जा रहा हूँ। अध्याय 38, पद 14: राजा सिदकिय्याह ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को बुलाया और यहोवा के मन्दिर के तीसरे द्वार पर उसका स्वागत किया।

वह प्रभु के मंदिर में उसी तरह अपना क्षण बिताने जा रहा है जैसे यहोयाकीम ने अध्याय 36 और 26 में किया था। राजा ने यिर्मयाह से कहा, मैं तुमसे एक प्रश्न पूछूंगा। मुझसे कुछ मत छिपाओ।

उसने राजा से कुछ भी नहीं छिपाया है, लेकिन वह फिर से पूछताछ करने जा रहा है। क्या आपके पास प्रभु का एक शब्द है? और मैं यहां केवल कुछ विशिष्ट बातों का उल्लेख करना चाहता हूँ। जैसे ही हम श्लोक 17 और 18 में जाते हैं, यहाँ प्रभु का वचन है।

आप को पता है की यह क्या है। बेबीलोनियों के सामने आत्मसमर्पण करो और बच जाओ। यदि तू बेबीलोन के राजा के हाकिमों के हाथ में आत्मसमर्पण कर दे, तो तेरा प्राण बचाया जाएगा, और नगर आग से न जलाया जाएगा, और तेरा घर जीवित रहेगा।

यहाँ अगर-तो वाली बात चल रही है। आपके पास भगवान के न्याय से बचने का मौका है। लेकिन अगर आप बेबीलोन के राजा के अधिकारियों के सामने आत्मसमर्पण नहीं करते हैं, तो यह शहर कसदियों के हाथों में दे दिया जाएगा।

तो, चुनाव आपका है। संदेश नहीं बदला है। यह बिल्कुल वही है जो हमने पैगंबर को बार-बार कहते सुना है।

अध्याय 37 और 38 में तीन अलग-अलग बार। फिर से, यह हमें अध्याय 27 की याद दिलाता है, तीन अलग-अलग बार, इन अलग-अलग समूहों को बेबीलोन के राजा के अधीन होना पड़ा। यहाँ स्पष्ट रूप से एक समानता है।

अंत में, पद 19 में, हमें राजा सिदकिय्याह से स्पष्टीकरण मिलता है कि वह कौन सी बात है जो उसे प्रभु के वचन का पालन करने से रोक रही है। और यहाँ सिदकिय्याह क्या कहता है। मैं उन यहूदियों से डरता हूँ जो कसदियों के पास भाग गए हैं, कहीं ऐसा न हो कि मैं उनके हाथ में सौंप दिया जाऊँ, और वे मेरे साथ क्रूरता से पेश आएँ।

देखो, मुझे उन लोगों से डर लगता है जिन्हें पहले ही बंधक बना लिया गया है और बेबीलोन में निर्वासित कर दिया गया है, या शायद वे लोग जो बेबीलोनियों के पास चले गए हैं। वे जो कुछ भी हो रहा है उसके लिए मुझे दोषी ठहराएंगे। और अगर मुझे इन लोगों के साथ जेल में डाल दिया गया, तो कोई मुझे आधी रात को मार डालेगा।

इसलिए, वह डरा हुआ है। इसलिए, आखिरकार, यह मनुष्यों का डर है जो उसे उचित रूप से डरने और परमेश्वर के प्रति प्रतिक्रिया करने से रोकता है। सिदकिय्याह इस बात से ज़्यादा डरता है कि अगर उसे पकड़ लिया गया और इन दूसरे यहूदी कैदियों को सौंप दिया गया तो उसके साथ क्या होगा, बजाय इसके कि अगर वह परमेश्वर के वचन को सुनने में विफल रहा तो उसके साथ क्या होगा।

और जब आप परमेश्वर के वचन को नहीं सुनते हैं तो जो परिणाम और आपदाएँ आने वाली हैं, वे हमेशा कहीं ज़्यादा गंभीर होंगी। लेकिन वह मनुष्यों से डरता है। वह इस बात से डरता है कि उसके साथ क्या होने वाला है।

यिर्मयाह यह कहने की कोशिश कर रहा है, देखो, तुम्हें यह समझने की ज़रूरत है कि अगर तुम परमेश्वर की बात नहीं मानोगे तो क्या होगा। और फिर अंत में, यहाँ एक आखिरी कथन है जो यिर्मयाह राजा से कहने जा रहा है। लेकिन अगर तुम आत्मसमर्पण करने से इनकार करते हो, तो यह वह दर्शन है जो प्रभु ने मुझे दिखाया है।

देखो, यहूदा के राजा के भवन में जितनी स्त्रियाँ रह गई थीं, उन सभी को बाबुल के राजा के हाकिमों के पास ले जाया गया, और स्त्रियाँ कहने लगीं, आओ हम ये बातें सुनें, क्योंकि यहाँ कुछ महत्वपूर्ण बात है। तुम्हारे विश्वासपात्र मित्रों ने तुम्हें धोखा दिया है और तुम पर हावी हो गए हैं। अब जब तुम्हारे पैर कीचड़ में धँस गए हैं, तो वे तुमसे दूर हो गए हैं।

ठीक है? तो, वह सिदकिय्याह को गिरफ्तार किए जाने और महल की महिलाओं द्वारा कहे जाने का चित्रण करता है, सिदकिय्याह, देखो तुम्हारे साथ क्या हुआ है। दोस्त, सहयोगी और अधिकारी तुमसे दूर हो गए हैं, और तुम्हारे पैर कीचड़ में धँस गए हैं। अब, शब्द बिल्कुल वही नहीं हैं, लेकिन मैं यह पढ़े बिना नहीं रह सकता कि अधिकारियों ने यिर्मयाह को कीचड़ में फेंक दिया, और यह

इस अध्याय में पहले, श्लोक 6 में कहा गया है कि कुण्ड में पानी नहीं था, बल्कि केवल कीचड़ था, और यिर्मयाह कीचड़ में धंस गया।

ठीक है, यह बुरा था। कुछ बुरी परिस्थितियाँ हैं। इस कहानी में असली कैदी सिदकिय्याह है।

वह यिर्मयाह से भी बदतर स्थिति में था, उसे हौज में फेंक दिया गया और कीचड़ में डूबने के लिए छोड़ दिया गया क्योंकि भगवान ने अंततः उसे छुड़ाने का वादा किया था। सिदकिय्याह कीचड़ में धंस गया है, और उसे छुड़ानेवाला कोई नहीं, क्योंकि उस ने यहोवा का वचन नहीं सुना। यिर्मयाह, जब यरूशलेम शहर पर कब्ज़ा होने वाला होता है, तो यिर्मयाह को रिहा कर दिया जाता है।

सिदकिय्याह को रिहा नहीं किया जाएगा, और एक कैदी की तरह जिसे एक हौद में फेंक दिया गया था, सिदकिय्याह के पैर कीचड़ में धंसने वाले हैं। अब, हम अध्याय 38 के अंत में आ गए हैं, और सिदकिय्याह और यिर्मयाह एक दूसरे के साथ जो अंतिम शब्द साझा करते हैं वह सिदकिय्याह यह स्पष्ट कर रहा है कि वह नहीं चाहता कि यिर्मयाह किसी को बताए कि उन्होंने किस बारे में बात की है। लेकिन इस अध्याय का अंतिम श्लोक यहां एक तरह से महत्वपूर्ण तरीके से मुझसे बात करता है।

इसमें कहा गया है, यिर्मयाह उस दिन तक पहरों के आँगन में रहा जब तक यरूशलेम पर कब्ज़ा नहीं कर लिया गया। और हमने इन विभिन्न प्रकरणों को समाप्त करने से पहले यिर्मयाह के जेल में होने के बारे में इस तरह के सारांश बयान देखे हैं। लेकिन इस कहानी में ऐसा कुछ भी नहीं है, इस अनुच्छेद में ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें प्रभु के वचन के प्रति सिदकिय्याह की प्रतिक्रिया के बारे में बताता हो।

यह मुझे कुछ मायनों में याद दिलाता है कि अध्याय 36 में वर्णनकर्ता क्या करता है जब बारूक सभी लोगों के सामने पुस्तक पढ़ता है, और उनकी प्रतिक्रिया का कोई उल्लेख नहीं होता है। यह वचन राजा की उपस्थिति में पढ़ा गया है। वह बस घटनाओं को सामने आने देता है, प्रतिरोध जारी रहता है, और वह प्रभु के वचन को नहीं सुनता है।

और अध्याय 39 में जो पहला कथन हम पढ़ते हैं वह एक शीर्षक है जो हमें बताता है कि अब यरूशलेम शहर गिरने वाला है। यहाँ भविष्यवाणी के न्याय की वास्तविक भावना है कि जिस व्यक्ति ने यिर्मयाह के पैरों को कीचड़ में धंसने दिया, वह अंततः कैदी के रूप में कीचड़ में धंसने वाला है। यिर्मयाह को रिहा किया जाएगा।

सिदकिय्याह ऐसा नहीं है। और मैं कहानियों में सभी विवरणों पर चर्चा नहीं करूंगा। हमने पहले भी यरूशलेम के पतन के बारे में बात की है, लेकिन मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि सिदकिय्याह के साथ क्या हुआ था।

परमेश्वर के वचन के प्रति उसकी प्रतिक्रिया 37 और 38 का एक बड़ा हिस्सा है, और इसलिए कथाकार के लिए यह जोर देना ज़रूरी है कि इसके परिणामस्वरूप सिदकिय्याह के साथ जो कुछ होता है, परमेश्वर न्याय कर रहा है। यही राजाओं और लोगों और नेताओं के साथ होता है

जब वे परमेश्वर के वचन को सुनने में विफल होते हैं। परमेश्वर का वचन जीवन और मृत्यु का मामला है।

जब यरूशलेम शहर पर कब्जा कर लिया गया, तो सिदकिय्याह और उसके बेटे रात में भागने का प्रयास करते हैं। वे इसे यरूशलेम से लगभग 10 या 15 मील बाहर बनाते हैं, और वे जेरिको के मैदानों में पकड़ लिए जाते हैं। फिर उन्हें बेड़ियों में जकड़ दिया गया और उन्हें रिबला में, जो सीरिया के उत्तर में है, नबूकदनेस्सर के पास कैदी के रूप में लाया गया।

नबूकदनेस्सर, क्योंकि सिदकिय्याह बेबीलोनियों के विरुद्ध विद्रोही था, उसने उसे अपनी कठपुतली के रूप में सिंहासन पर बिठाया था। हमारे हितों का ख्याल रखें, हमारे अधीन हो जाएं, हमें श्रद्धांजलि दें, यहां की स्थिति बनाए रखें, और हम आपको सिंहासन पर बने रहने और राजा होने का नाटक करने की अनुमति देंगे। एक अर्थ में, यह वही था।

सिदकिय्याह एक शासक के रूप में ऐसा करने के लिए बहुत कमजोर था, और इसलिए नबूकदनेस्सर ने उसे एक विद्रोही के रूप में सजा सुनाई। और सज़ा यह है कि सिदकिय्याह के पुत्रों को उसके सामने मार डाला जाए। और फिर बेबीलोनियों ने सिदकिय्याह की आंखें निकाल लीं।

और मैं इस तथ्य के बारे में सोचने से खुद को नहीं रोक सकता कि प्रभु के वचन को सुनने की उसकी अनिच्छा अंततः अध्याय 39 में अंधेपन और कारावास की सजा की ओर ले जाती है। आध्यात्मिक अंधेपन के गंभीर परिणाम होते हैं। लगभग, और मुझे नहीं पता कि यहाँ कोई विशेष संबंध है या नहीं, लेकिन हमें लगभग याद आ जाता है कि सैमसन के साथ उसके जीवन के अंत में क्या हुआ था।

उसे अंधा कर दिया गया है और उसे कैदी के रूप में ले जाया गया है। और सिदकिय्याह बेबीलोन के कैदी के रूप में एक अंधे व्यक्ति के रूप में मरने जा रहा है, जिसे प्रभु के वचन का पालन करने में विफल रहने के कारण उसके बेटों से वंचित कर दिया गया है। यहाँ न्याय की भावना भी है कि जिन अधिकारियों और राजा ने यिर्मयाह को जेल में रखा है, और जेलें यिर्मयाह की सेवकाई के लिए ऐसा संदर्भ प्रदान करती हैं, जिन लोगों ने यिर्मयाह के साथ ऐसा किया है, वे अब अपने स्वयं के कारावास का अनुभव करेंगे।

और जबकि परमेश्वर ने यिर्मयाह को रिहा करना संभव बनाया, और बेबीलोन के लोग, जब वे शहर पर कब्जा करेंगे, तो वे उसे जेल से मुक्त करने वाले होंगे, उस कैद से जो अधिकारियों और राजा ने यिर्मयाह पर ये सब किया, उनके लिए कोई मुक्ति नहीं होने वाली है। और वह सब जो लोगों और सभी नेताओं और यहूदा के राजा को उम्मीद करनी होगी जिन्होंने प्रभु के वचन का पालन नहीं किया, कारावास की सजा है, और जब तक साइरस बेबीलोन शहर पर विजय प्राप्त नहीं कर लेता और यहूदियों को उनके वतन लौटने की अनुमति नहीं देता, तब तक कोई रिहाई नहीं होगी। लेकिन यह एक और पीढ़ी के लिए होने जा रहा है।

इसलिए, हमने 26 से 45 तक कुछ समय उन सभी तरीकों को देखने में बिताया है जिनसे वर्णनकर्ता यह प्रदर्शित करता है कि यरूशलेम का पतन और यरूशलेम का न्याय पूरी तरह से

उचित था। यहाँ भविष्यवाणी के न्याय की भावना है क्योंकि यह वह दंड है जो यहूदा को प्रभु के वचन को सुनने में विफल रहने के कारण मिला। जिन लोगों ने यिर्मयाह को कारावास और उत्पीड़न दिया था, वे अब अपने स्वयं के उत्पीड़न और कारावास का अनुभव करने जा रहे हैं।

और इसलिए, जैसा कि हम इस पूरे खंड को देख रहे हैं और हम उन सभी चीजों के बारे में सोचते हैं जिनके बारे में हमने पिछले सत्रों में बात की है, यह बाइबिल का एक बहुत ही निराशाजनक हिस्सा है। अध्याय 26 में इन पैनलों में से प्रत्येक की शुरुआत में यहूदा को जो जीवन का प्रस्ताव दिया गया है, अध्याय 35 में केवल रेकाबाइट्स ही इसका अनुभव करते हैं। दूसरे पैनल में, जीवन का प्रस्ताव जो इज़राइल को दिया जाता है जब टेंपल स्कॉल 605 ईसा पूर्व में पढ़ा गया था, उस पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देने वाला एकमात्र व्यक्ति बारूक है।

लेकिन अगर हम यिर्मयाह की किताब के इस खंड में वापस जाते हैं, तो हम यह भी देखेंगे कि कभी-कभी, पंक्तियों के बीच और कभी-कभी कम प्रमुख आंकड़ों के रूप में, भविष्यवाणी शब्द और शब्द के प्रति आज्ञाकारिता के अन्य सकारात्मक उदाहरण भी हैं प्रभु की। और इसलिए, मैं चाहूंगा कि हम आज्ञाकारिता के उन कुछ सकारात्मक उदाहरणों को देखकर इस पाठ को समाप्त करें, जो लोग प्रभु के वचन को सुनते थे। हमारे पास सिदकिय्याह के साथ ऐसा नकारात्मक उदाहरण है और बड़े पैमाने पर लोगों के साथ जो हुआ उसके परिणाम हैं, लेकिन आइए कुछ सकारात्मक उदाहरणों को याद रखें जिनसे हमें 26 से 45 में भी परिचित कराया गया है।

सबसे पहले, मंदिर उपदेश पर वापस जा रहे हैं। उस प्रतिक्रिया को याद रखें जहां लोगों ने कहा, अधिकारियों और लोगों ने पुजारी और भविष्यवक्ताओं से कहा, और यह आदमी मौत की सजा के लायक नहीं है क्योंकि उसने हमारे भगवान भगवान के नाम पर हमसे बात की है। वे यिर्मयाह को एक सच्चे भविष्यवक्ता के रूप में पहचानते हैं।

त्रासदी यह है कि वे वास्तव में उस पर प्रतिक्रिया नहीं देते हैं या वास्तव में इसके बारे में कुछ नहीं करते हैं, लेकिन यहां सकारात्मक प्रतिक्रिया है। अध्याय 26, पद 24 हमें बताता है कि जब राजा यहोयाकीम ने ऊरिय्याह भविष्यवक्ता को मार डाला, तो पद 24 में कहा गया है, परन्तु शाफान के पुत्र अहीकाम का हाथ यिर्मयाह के साथ था, इसलिए उसे मौत के घाट नहीं उतारा गया। तो यिर्मयाह की पूरी किताब में शापान का यह परिवार, वे यिर्मयाह के समर्थक होने जा रहे हैं।

वे उनके संदेश को गंभीरता से लेंगे। और इस समय जब यहोयाकीम न्याय के भविष्यवक्ताओं को मिटाने की कोशिश कर रहा है, वह गवाहों में से एक की देखभाल कर रहा है। शायद अगर मैं दूसरे से छुटकारा पा सकता हूं, तो हम भी ऐसा ही कर सकते हैं।

अहिकाम हस्तक्षेप करता है और यिर्मयाह की रक्षा के लिए अपने प्रभाव का उपयोग करता है और वह उसे छिपा देता है ताकि राजा उस पर अपना प्रभाव न डाल सके। शापान का परिवार एक उदाहरण बनने जा रहा है। धर्मशास्त्री परिवार प्रभु के वचन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया का एक उदाहरण बनने जा रहा है।



यिर्मयाह का मुंशी, बारूक, प्रभु की आज्ञाकारिता का एक सकारात्मक उदाहरण है। जब प्रभु ने उससे वह संदेश लिखवाया जो यिर्मयाह ने उसे सुनाया था, बारूक वह व्यक्ति है जो ईमानदारी से उस आदेश को पूरा करता है और मंदिर जाता है, और उस सब में शामिल सभी जोखिमों के बावजूद, वह वही करता है जो प्रभु करता है उसे ऐसा करने की आज्ञा देता है, और बहुत वास्तविक तरीके से, बारूक स्वयं यिर्मयाह की तरह ही परमेश्वर का एक वफादार सेवक है। इसीलिए अध्याय 45 में, वह वह व्यक्ति है जिसे इसके अंत में सकारात्मक रूप से पुरस्कृत किया गया है।

अध्याय 36, श्लोक 11, जब बारूक ने स्कॉल पढ़ा और बड़े पैमाने पर लोगों ने इसे अनदेखा कर दिया, यह हमें श्लोक 11, अध्याय 36 में बताता है, जब शापान के बेटे गमर्याह के बेटे मीकायाह ने ये सभी शब्द सुने, फिर से, यह शापान के इस शास्त्रियों के परिवार का एक सदस्य है जो परमेश्वर के वचन को सुनता है, इसे अन्य अधिकारियों के पास ले जाता है और वे कहते हैं, वाह, हमारे यहाँ एक संकट है, हमें इसे राजा के पास ले जाने की आवश्यकता है। उस दिन कम से कम लोगों का एक समूह था जब राष्ट्र ने इसे अनदेखा कर दिया, जब राजा ने स्कॉल को नष्ट कर दिया, कम से कम कुछ शास्त्री और अधिकारी थे जिन्होंने पैगंबर की बात सुनी। हमें बहुत जल्दी एबेद-मेलेक से परिचित कराया गया।

अध्याय 38, श्लोक 7 से 13. यह विडंबना है कि एक अधिकारी जो यहाँ स्थिति में कदम रखता है और कहता है, देखो, हमें यिर्मयाह की बात सुननी चाहिए, हम यहाँ यिर्मयाह को मौत के घाट उतारकर बहुत बड़ा पाप करेंगे, एक अधिकारी जो उसके लिए खड़ा होता है वह है एबेद-मेलेक, एक इथियोपियाई नपुंसक। इसलिए, जो विदेशी वाचा से बाहर थे, उन्होंने वास्तव में यहूदियों की तुलना में परमेश्वर के वचन का अधिक ईमानदारी से जवाब दिया।

और मेरा मानना है कि यहाँ इथियोपियाई खोजे एबेद-मेलेक ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में हमारे लिए एक इथियोपियाई खोजे का पूर्वावलोकन और पूर्वाभास किया है जो एक भविष्यवाणी संदेश पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देगा और यीशु को जान जाएगा और बपतिस्मा लेगा। हमारे पास यिर्मयाह की पुस्तक में एक और वफादार इथियोपियाई खोजे हैं। इस पुस्तक के अंत में, 39:15 से 18 में, यरूशलेम शहर पर कब्ज़ा करने के बाद, एबेद-मेलेक को जो वादा किया गया है, उसके अनुसार एबेद-मेलेक की जान बच जाती है।

और प्रभु ने उसे इस तथ्य के कारण वचन दिया कि वह वही था जिसने यिर्मयाह को कुंड से बाहर निकालने के लिए हस्तक्षेप किया था। सेनाओं का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देख, मैं इस नगर के विषय में जो बातें भलाई के लिखे नहीं, हानि ही के लिखे पूरी करूंगा, और वे आज के दिन तुम्हारे साम्हने पूरी होंगी। परन्तु यहोवा की यह वाणी है, कि उस दिन मैं तुम्हें बचाऊंगा, और जिन मनुष्यों से तुम डरते हो उनके हाथ में न पड़ने पाओगे।

क्योंकि मैं निश्चय तुझे बचाऊंगा, और तू तलवार से न मरेगा, परन्तु युद्ध के बदले में तू अपना प्राण पाएगा। तो, यहोवा यिर्मयाह को छुड़ाने जा रहा है। यहोवा बारूक को छुड़ानेवाला है।

परन्तु यहोवा एबेदमेलेक को भी छुड़ानेवाला है। और वही अभिव्यक्ति जो बारूक की मुक्ति का वर्णन करने के लिए उपयोग की जाती है, आपको अपना जीवन युद्ध के पुरस्कार के रूप में मिलेगा। उस सिपाही का मजाक याद है।

युद्ध में चीजें ठीक नहीं रहीं। हम कोई लूटपाट करके नहीं लाए, लेकिन कम से कम हमने अपनी गर्दन तो बचा ली। प्रभु ने एबेद-मेलेक से वादा किया कि परमेश्वर के प्रति उसकी आज्ञाकारिता और भविष्यवक्ता के जीवन की देखभाल करने का इनाम यह है कि जब यरूशलेम शहर पर कब्जा कर लिया जाएगा, तो प्रभु उसे उसी तरह से बचाएंगे जैसे वे बारूक और यिर्मयाह को बचाएंगे।

इसलिए, जैसा कि हम पुस्तक के इस भाग को देखते हैं, यह बहुत निराशाजनक समय है। इसमें सभी प्रकार की अवज्ञा, सभी प्रकार के प्रकरण हैं जहाँ हम मूल रूप से जानते हैं कि चीजें कैसे होने वाली हैं। कोई व्यक्ति प्रभु का वचन सुनने जा रहा है और उस पर सकारात्मक तरीके से प्रतिक्रिया नहीं करेगा।

लेकिन राष्ट्रीय धर्मत्याग के इस समय में भी, इस समय में भी जब भविष्यवाणी के वचन का इतना विरोध हो रहा है, शापान के ये परिवार के सदस्य हैं। एबेद-मेलेक हैं। ऐसे राजकुमार और अधिकारी हैं जो यिर्मयाह के संदेश को गंभीरता से लेते हैं।

बारूक नाम का एक वफादार शास्त्री है। रेकाबी लोग हैं जो अपनी पारिवारिक परंपराओं के प्रति वफादार रहते हैं। राष्ट्रीय धर्मत्याग के बीच, हमेशा एक अवशेष रहता है।

और पूरे इतिहास में, परमेश्वर के लोगों के इतिहास में, उद्धार के इतिहास में, यह अवशेष हमेशा परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के सेवकों के संदेश के प्रति वफादारी और आज्ञाकारिता द्वारा चिह्नित किया जाएगा।

यह डॉ. गैरी येट्स द्वारा यिर्मयाह की पुस्तक पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 23, यिर्मयाह 37-39, सिदकिय्याह की अवज्ञा और यरूशलेम का पतन है।